RECENT RESEARCHES in
SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES

Issue : 1, Year : 4
Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 45 - 48
ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

ईटकी प्रखण्ड में फूलों की खेती का विकास : एक अध्ययन

अनुप कुमार महतो
जूनियर रिसर्च फेलो,
भूगोल विभाग, राँची विश्वविद्यालय,
राँची, झारखण्ड

भूपाल कुमार महतो
विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग,
मरवाड़ी कॉलेज,
राँची, झारखण्ड

Received : 21/02/2017 *1st BPR* : 28/02/2017 *2nd BPR* : 13/03/2017 *Accepted* : 10/04/2017

ABSTRACT

फूलों की खेती बागवानी का एक प्रमुख भाग है। वर्तमान समय में अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, राज्य एवं स्थानीय या क्षेत्रीय स्तर पर एक प्रमुख व्यवसाय के रूप में उभर रहा है। अध्ययन क्षेत्र ईटकी प्रखण्ड में व्यवसायिक रूप में मुख्यतः गेंदा, गुलाब, जरबेरा, ग्लेडुलस फूलों की खेती की जाती है। इस प्रखण्ड में फूलों की खेती के विकास के लिए काफी अनुकूल दशाएँ एवं पर्याप्त संभावनाएँ है। जिनका विश्लेषण एवं वर्णन इस शोध पत्र में लिया गया है।

संकेत शब्द : व्यवसायिक फूलों की खेती, उत्पादन, क्षेत्र, उत्पादन नर्सरी

फूलों की खेती बागवानी का एक हिस्सा है। फूलों में शोभाकारी रंगों की विविधता होती है, जिनकी खूबसूरती आँखों में समा जाती है। हवा जब फूलों को छूकर बहती है, तो हर आने जाने वालों को मदमस्त कर देती है। फूलों की महक से सुगंधित होकर नन्हीं चिड़ियाँ अपना अलख सुनाने लगती है। फूलों का जन्म इस धरती पर आदम काल और आदम जाति से पूर्व हुआ। अर्थात प्राचीन काल से ही फूल इस धरती की गोद को रमणीय, रंगीन तथा हरा–भरा किये हुए थे। रंग–बिरंगे फूलों ने वनस्पति जगत् की काया ही पलट दी। फूल, प्रकृति एवं सौन्दर्य के अलावा प्रेम और शान्ति का प्रतीक माना जाता है। फूलों का उपयोग शारीरिक सजावट, घर सजावट, बगिया आदि मशहूर था और आज भी है। कोई उत्सव हो या कोई महत्वपूर्ण कार्य, फूल उसका केन्द्र बिन्दु होता है। धार्मिक कार्य तथा देवी–देवताओं के प्रति श्रद्धा प्रकट, हम सब फूलों के द्वारा करते है।

वर्त्तमान समय में फूलों की खेती अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, राज्य, जिला एवं प्रखण्ड स्तर पर एक महत्वपूर्ण व्यवसाय के रूप में उभर रहा है। झारखण्ड के स्थापना के पश्चात पूरे राज्य के साथ–साथ ईटकी प्रखण्ड में भी फूलों की खेती का विकास बहुत तेजी से हो रहा है।

फूलों की खेती को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है –

1. **सजावटी/शोभाकरी फूलों की खेती**
   इसके अंतर्गत घरों, कार्यालय, उद्योगों के प्रांगण एवं आस–पास लगाये जाते है। ये छोटे–छोटे क्यारियों या गमलों में लगाया जाता है। इसका उद्देश्य शोभा या सौन्दर्भ वृद्धि होता है। इस प्रकार के फूलों की खेती उद्यानों या पार्कों में भी किया जाता है। इसके अंतर्गत गुलाब, गुलदाउदी, चमेली, डहेलिया, कामीनी, चम्पा आदि।

2. **व्यवसायिक फूलों की खेती**
   इसके अंतर्गत बड़े–बड़े खेतों में फूलों के पौधे आर्थिक लाभ के उद्देश्य से लगाये जाते है। वर्तमान समय में फूलों के पौधे ग्रीन हाऊस एवं पॉली हाऊस में उगाये जाते है एवं सिंचाई हेतु ड्रिप सिंचाई, स्प्रेंकलर एवं फब्वारा सिंचाई जैसे आधुनिक तकनीक का प्रयोग किया जाता है। व्यवसायिक उद्देश्य से उगाये जाने वाले फूल के पौधों में गुलाब, गेंदा, जरबेरा, ग्लेडुलस, कार्नेशन, राजनीगंधा आदि है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र ईटकी प्रखण्ड में फूलों की खेती का विकास, विकास को प्रभावित करने वाले कारक एवं सरकारी योजनाओं एवं कार्यक्रमों की भूमिका का अध्ययन करना है। साथ ही साथ फूलों की खेती के विकास

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 45-48 , ISSN 2348 – 3318
अनुप कुमार महतो एवं भूपाल कुमार महतो
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

में सदबहार विकास संस्थान एवं सदाबहार विकास नर्सरी की भूमिका का भी अध्ययन करना है।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र ईटकी प्रखण्ड राँची जिला के पश्चिमी भाग में स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 24068.35 एकड़ है। यह दक्षिणी छोटानागपुर पठार का हिस्सा है। इस प्रखण्ड में मुख्यतः लैटेराइट मिट्टी पायी जाती है और यह एक कृषि प्रधान प्रखण्ड है। इस प्रखण्ड से होकर प्रवाहित होने वाली नदियाँ कारो, पोटपोटो एवं बिलगोरा है। यहाँ तीन स्पष्ट ऋतुएँ पायी जाती है। ग्रीष्म ऋतु (मार्च से मध्य जून तक), वर्षा ऋतु (मध्य जून से अक्टूबर तक) एवं शीत ऋतु (नवम्बर से फरवरी तक) यहाँ की जलवायु न तो बहुत अधिक गर्म और न ही बहुत अधिक ठण्डी हाती है। औसत वार्षिक वर्षा 150 से.मी. लगभग होती है। इस प्रखण्ड से होकर राँची लोहरदगा रेलमार्ग एवं राष्ट्रीय राजमार्ग 23 गुजरता है। यह प्रखण्ड राँची नगरीय क्षेत्र से 22 कि0मी0 की दूरी पर है। यहाँ की कुल जनसंख्या 49,935 (2011) है।

आँकड़ों का संकलन एवं विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है जो सदाबहार विकास संस्थान से प्राप्त किया गया है। साथ ही क्षेत्र अध्ययन एवं सारणीयता जैसे विधियों का भी प्रयोग किया गया है।

ईटकी प्रखण्ड में फूलों के विकास के कारक

अध्ययन क्षेत्र ईटकी प्रखण्ड फूलों की खेती के विकास के अनेक भौतिक एवं मानवीय कारक है जो निम्नलिखित हैः–

(क) भौतिक कारक

भौतिक कारक के अंतर्गत निम्नलिखित कारक आते हैंः–

उच्चावच या धरातलीय बनावट

अध्ययन क्षेत्र की भूमि को उच्चवच के आधार पर दो भागों में बाँटा जाता है– पहला दोन एवं दूसरा टांड। इस प्रखण्ड में पहाड़ी या पठारी भूमि का अभाव है। वन क्षेत्र के अतिरिक्त अधिकांश भूमि कृषि योग्य भूमि है। जिस कारण फूलों की खेती के लिए पर्याप्त भूमि उपलब्ध है।

उपजाऊ मृदा

यहाँ की मिट्टी मुख्य रूप से लैटेराइट प्रकार की है। किन्तु स्थानीय रूप से कहीं–कहीं चिकनी मिट्टी, बलुई मिट्टी एवं नगड़ा मिट्टी भी पायी जाती है। जो फूलों की खेती के लिए काफी उपयुक्त एवं उपजाऊ है।

अनुकूल जलवायु

अध्ययन क्षेत्र की जलवायु अनेक प्रकार की फूलों जैसे– गेंदा, जरबेरा, गुलाब, ग्लेडुलस एवं कार्नेशन के लिए काफी उपयुक्त है। यहाँ के कृषकों द्वारा वर्ष भर इन फूलों के फसलों का सफलतापूर्वक उत्पादन किया जाता है।

(ख) मानवीय कारक

मानवीय कारक के अंतर्गत निम्नलिखित कारक आते हैः–

यातायात की सुविधा

अध्ययन क्षेत्र ईटकी प्रखण्ड में यातायात के पर्याप्त साधन उपलब्ध है। यहाँ से होकर राष्ट्रीय राजमार्ग 23 गुजरात है। साथ ही राँची लोहरदगा रेललाइन इस प्रखण्ड से होकर गुजरती है। साथ ही ईटकी से राँची के लिए दिनभर सिटी राइड बस एवं टेम्पो की सुविधा उपलब्ध है। जिससे यहाँ के कृषकों को राँची तक अपने उत्पाद भेजना काफी आशान एवं सुविधाजनक है।

श्रम की पर्याप्त उपलब्धता

अध्ययन क्षेत्र में फूलों के खेतों में काम करने के लिए पर्याप्त श्रम उपलब्ध है। साथ ही फूलों की खेती महिला प्रधान व्यवसाय है और यहाँ नौकरी, व्यवसाय एवं उद्योगों की कमी के कारण पर्याप्त श्रम की उपलब्धता है।

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 45-48 , ISSN 2348 – 3318
अनुप कुमार महतो एवं भूपाल कुमार महतो
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

राँची नगरीय क्षेत्र की निकटता

अध्ययन क्षेत्र ईटकी प्रखण्ड से राँची नगर की दूरी लगभग 22 किमी है। जिसके कारण उत्पादित फूलों की आसानी से बिक्री हो जाती है। साथ ही पर्याप्त मांग भी रहता है। राँची में स्थानीय उत्पादन से मांग की पूर्ति न होने के कारण पश्चिम बंगाल से फूलों का आयात किया जाता है। इस प्रकार पर्याप्त मांग एवं बाजार की सुविधा उपलब्ध है।

सिंचाई की पर्याप्त सुविधा एवं आधुनिक तकनीक का प्रयोग

इस प्रखण्ड में सिंचाई के साधन के रूप में कुआँ, तालाब, चेकडेम, डिप बोरिंग पर्याप्त संख्या में है। वर्तमान समय में डिप बोरिंग सिंचाई के मुख्य साधन के रूप में है। जहाँ पर्याप्त मात्रा में जल उपलब्ध होता है। साथ ही वर्तमान समय फूलों की खेती में सिंचाई के आधुनिक तकनीक जैसे– ड्रिप सिंचाई, स्प्रेंकलर एवं फब्बारा सिंचाई विधि का प्रयोग किया जाता है। जिससे कम जल से अधिक क्षेत्र में खेती संभव है। सरकार की ओर से ड्रिप सिंचाई हेतु योजनाएँ भी चलायी जा रही है।

फूलों की खेती का विकास

अध्ययन क्षेत्र ईटकी प्रखण्ड में फूलों की खेती का निरंतर विकास हो रहा है। यहाँ फूलों की खेती का विकास लगभग 2000 ई0 में मलटी गाँव से हुआ जो श्यामधनी महतो के द्वारा आई.सी.ए.आर. प्लाण्डू से प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रारंभ किया गया था। तब से यहाँ फूलों का लगातार विकास हो रहा है। 2004–05 में झारखण्ड में राष्ट्रीय बागवानी मिशन के स्थापना के पश्चात फूलों की खेती से संबंधित अनेक कार्यक्रम एवं योजनाएँ चलाए जा रहे है। जैसे– किसानों को प्रशिक्षण देना, बीज एवं पौधों का वितरण, नेट हाऊस, पॉली हाऊस का निर्माण ड्रिप सिंचाई सामग्री का वितरण आदि कारणों से अध्ययन क्षेत्र में फूलों की खेती का निरंतर विकास हो रहा है।

वर्ष 2010 में प्रमुख फूलों का उत्पादन क्षेत्र एवं उत्पादन निम्नलिखित हैः–

क्र.सं.	फूल	उत्पादन क्षेत्र (एकड़ में)	उत्पादन
1	गेंदा	10	500 क्विंटल
2	गुलाब	2	12,00,000 पिस
3	जरबेरा	4	2,20,000 पिस
4	ग्लेडुलस	6	2,70,000 पिस
	कुल	**22**	

स्त्रोत : सदाबहार विकास संस्थान

वर्ष 2014 में प्रमुख फूलों का उत्पादन क्षेत्र एवं उत्पादन निम्नलिखित हैः–

क्र.सं.	फूल	उत्पादन क्षेत्र (एकड़ में)	उत्पादन
1	गेंदा	15	750 क्विंटल
2	गुलाब	4	2,40,000 पिस
3	जरबेरा	7	3,85,000 पिस
4	ग्लेडुलस	11	4,95,000 पिस
	कुल	37	

स्त्रोतः सदाबहार विकास संस्थान

अध्ययन क्षेत्र ईटकी प्रखण्ड में प्रमुख फूल उत्पादक गाँव मलटी, पलमा, कुली, तरगड़ी, दरहाटांड़, भण्डरा, कुर्गी, चचगुरा, तुरगुडु आदि है।

नर्सरी

अध्ययन क्षेत्र में एक नर्सरी है– सदाबहार विकास नर्सरी जो 5 एकड़ में फैला हुआ है। यहाँ विभिन्न फूलों के उत्पादन के साथ ही फूलों का पौधा एवं बीज तैयार किया जाता है जो स्थानीय कृषकों की आवश्यकता की पूर्ति करता है। इस प्रखण्ड में फूलों की खेती के विकास में सदाबहार विकास नर्सरी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इस नर्सरी में स्थानीय कृषकों को फूलों का उत्पादन की खेती से संबंधित एवं बाजार से संबंधित जानकारी प्रदान किया जाता है। इस नर्सरी का अलग–अलग जगहों में 4 ग्रीन हाऊस एवं 3 पॉली हाऊस है जिसमें वर्ष भर फूलों का उत्पादन किया जाता है।

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 45-48 , ISSN 2348 – 3318
अनुप कुमार महतो एवं भूपाल कुमार महतो
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

निष्कर्ष

इस प्रकार उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि ईटकी प्रखण्ड में फूलों की खेती के विकास के लिए भौगोलिक एवं मानवीय कारक काफी अनुकूल है। साथ ही यहाँ फूलों की खेती का निरंतर विकास भी हो रहा है। फूलों की खेती के विकास का सबसे महत्वपूर्ण एवं सहायक कारक अनुकूल जलवायु एवं राँची नगरीय क्षेत्र की निकटता है। फूलों की खेती महिला प्रधान व्यवसाय है। जिससे महिलाओं की आर्थिक स्तर में विकास हो रहा है। अध्ययन क्षेत्र में फूलों की खेती के विकास में सरकारी योजनाओं एवं कार्यक्रम के अतिरिक्त सदाबहार विकास नर्सरी का महत्वपूर्ण योगदान है। जो इस प्रखण्ड में फूलों की खेती के विकास में मील का पत्थर साबित हो रहा है।

संदर्भ

- Chottapadhyay, S.K. (2007) : Commercial Flriculture, Gene-Tec Books, New Delhi.
- मौर्य, के.आर. (2006) : फूलों की व्यावसायिक खेती, दया पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली
- Roy, A. Larson (1980) : Introduction of floriculture, Academic press, 111 fifth Avanue, New York, 10003
- सैनी, रणवीर सिंह एवं सिंह, सुरेन्द्र : बागवानी सिद्धांत एवं क्रियाकलाप, एग्रोटेक पब्लिशिंग एकेडमी, उदयपुर
- सिंह , मारकण्डेय एवं कुमार, संजय (2012) : पुष्प उत्पादन की तकनीक, Today & Tomorrow's printers and publishers.
- महतो, बी.के, 2004, झारखण्ड : एक अध्ययन, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
- तिवारी, राम कुमार (2005) : झारखण्ड की रूपरेखा, सिवांगन पब्लिकेशन, राँची, पटना